SHRI MIRIYALA APPARAO (POSTHUMOUS)

Shri Miriyala Apparao was a pioneering figure in the field of Burrakatha (traditional storytelling).

2. Born on 9th September, 1949 in Nadakuduru Village, Kadapa Mandal, East Godavari District, Andhra Pradesh, Shri Apparao began his journey in this art form at the age of 15 when he performed his first stage show at Jonnada Village in Ravulapalem Mandal. Over the span of 53 years, from 1968 to 2021, Shri Apparao performed thousands of shows, significantly contributing to the preservation and promotion of Burrakatha, a revered tradition in Andhra Pradesh. His performances were not limited to Andhra Pradesh, as he took his art across borders, performing Burrakatha in countries like Singapore. He also participated in notable cultural events, including the Janapada Vibhaga Pradarshana at the Andhra Cultural University in New Delhi, where his artistry and influence were recognized on a national level.

3. Shri Apparao's contributions to Burrakatha extended to the world of broadcasting, where he showcased his talent on platforms like All India Radio and Doordarshan, earning B-high Grade and A Grade recognition respectively. His artistry and passion for the form have not only preserved the tradition, but have also inspired the younger generation to embrace Burrakatha. Over 200 individuals have had the privilege of learning directly from him, furthering the legacy of this traditional art form. His artistic journey has had a profound impact on society and his community. He has left behind a remarkable legacy that will continue to influence and inspire the art of Burrakatha storytelling for many years to come.

4. Shri Apparao had been honored with several prestigious titles and awards, including Gana Kokila, Gana Tumbura, Burrakatha Tiger, Ragala Apparao, The YSR Life Achievement Award in 2021, Suvarna Ganta Kankanam by the villagers of Nadakuduru in 1970, State-level 1st Prize in Burrakatha in 1975 from the Government's competition.

5. Shri Apparao passed away on 15th January, 2025.

श्री मिरियाला अप्पारावु (मरणोपरांत)

श्री मिरियाला अप्पारावु बुर्राकथा (पारंपरिक किस्सागोई) के क्षेत्र में अग्रणी व्यक्ति थे ।

2. 9 सितंबर, 1949 को कोकडपा मण्डल, पूर्वी गोदावरी जिला, आंध्र प्रदेश के नादाकुडुरु गांव में जन्मे, श्री अप्पारावु ने इस कला रूप की अपनी यात्रा 15 वर्ष की उम्र में शुरू की, जब उन्होंने रावुलापलेम मंडल के जोनाडा गांव में अपना पहला स्टेज शो किया। 1968 से 2021 तक, 53 वर्षों की अवधि में, उन्होंने हज़ारों शो किए, जिससे आंध्र प्रदेश की एक प्रतिष्ठित परंपरा बुर्राकथा के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान मिला। उनके प्रदर्शन सिर्फ़ आंध्र प्रदेश तक सीमित नहीं थे, बल्कि उन्होंने अपनी कला को सीमाओं के पार ले जाकर सिंगापुर जैसे देशों में बुर्राकथा का प्रदर्शन किया। उन्होंने नई दिल्ली स्थित आंध्र कल्चरल यूनिवर्सिटी में जनपद विभाग प्रदर्शन सहित उल्लेखनीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लिया,जहां उनकी कला और प्रभाव को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली।

3. बुर्राकथा में श्री अप्पारावु का योगदान प्रसारण की दुनिया तक फैला है, जहां उन्होंने आकाशवाणी और दूरदर्शन जैसे मंचों पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया, और क्रमशः बी–हाई ग्रेड और ए ग्रेड की मान्यता अर्जित की। उनकी कला और इस विधा के प्रति जुनून ने न सिर्फ इस परंपरा को संरक्षित किया है, बल्कि युवा पीढ़ी को बुर्राकथा को अपनाने के लिए प्रेरित भी किया है। लगभग 200 लोगों को सीधे उनसे सीखने का सौभाग्य मिला है, जिससे इस पारंपरिक कला रूप की विरासत आगे बढ़ रही है। उनकी कलायात्रा का समाज और उनके समुदाय पर गहरा प्रभाव पड़ा है। वह अपने पीछे एक महत्वपूर्ण विरासत छोड़कर गए हैं, जो आने वाले कई वर्षों तक बुर्राकथा किस्सागोई की कला को प्रभावित और प्रेरित करती रहेगी।

4. श्री अप्पारावु को कई प्रतिष्ठित उपाधियां और पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें गण कोकिला, गण तुम्बुरा, बुर्राकथा टाइगर, रागला अप्पाराव, 2021 में वाईएसआर लाइफ अचीवमेंट अवार्ड, 1970 में नाडाकुडुरु के ग्रामीणों द्वारा सुवर्णा गंताकंकणम, 1975 में सरकारी प्रतियोगिता में बुर्राकथा में राज्य स्तर पर प्रथम पुरस्कार शामिल हैं।

5. श्री अप्पारावु का 15 जनवरी, 2025 को निधन हो गया।